झूठा है महावृत्तांत

डॉ. उमेश कुमार शर्मा
युवा साहित्यकार

झूठा है महावृत्तांत!
झूठी हैं, सब कहानियाँ
कुंठित है हमारा इतिहास और पुराण,
क्योंकि सत्य को अक्सर छिपाया है सबने

जिस सीता ने बाएँ हाथ से उठाया था शिव-धनुष
जिस पर प्रत्यंचा चढ़ाने में पस्त हो गये थे शूरवीर
उसे यूँ ही नहीं उठा पाया होगा रावण
वह लड़ी होगी, शक्ति भर अन्याय के खिलाफ
और अंततः वह छल से हारी होगी,
जैसे आज भी छल से हार रही हैं सीता....!

यज्ञकुंड से उद्भूत द्रौपदी का
यूँ ही नहीं हुआ होगा चीरहरण
वह दमभर लड़ी होगी, असत्य के खिलाफ
और तब हारी होगी, जब अपनों ने छला होगा उसे
जैसे आज भी अपनों से छली जाती हैं द्रौपदी!

अहिल्या पत्थर न हुई होगी गौतम के श्राप से
उसे पत्थर बनाया होगा, सामाजिक बहिष्कार ने
जैसे आज भी बलात्कार से नहीं बहिष्कार से
पत्थर बन रही हैं अहिल्याएँ!

गीत—होली

विनय साग़र जायसवाल
बरेली

बरस रहा है पिचकारी से, लाल गुलाबी रंग।
रंग बिरंगी बौछारों से, पुलक उठा हर अंग।।

होली होली हुरयारों का, गूँज रहा है शोर
गली-गली में नाच रहा है, मादक मन का मोर
नयी उमंगे लेकर आया यह फागुन का भोर
थिरक उठीं ढोलक की थापें,बाज रही है चंग।
चौबारे में मचा हुआ है, होली का हुडदंग।। बरस रहा है-----

रंग दिये हैं बनवारी ने, राधा जी के गाल
खिले हुए हैं इक दूजे में,केसर और गुलाल
दृश्य मनोहर देख देख कर,मन में उठे उबाल
छलकी है आँखों में मस्ती, ज्यों पीली हो भंग।
रोम-रोम में जाग उठा है,सोया हुआ अनंग।। बरस रहा है------

कभी सताया जी भर तुमने, कभी किया मनुहार
छेड़ छाड़ में मेरे साजन टूटा मुक्ताहार
मचल रहा है फिर नयनों में, वह सोलह श्रंगार
तुम्हीं बताओ अब मैं आखिर, खेलूँ किसके संग।
रंग देख कर उठ आई है, मन में नयी उमंग।। बरस रहा है---

एक चाँद सा मुखड़ा चमका, फिर नयनों के पास
जिसे देखकर भर आया है, मन में नव उल्हास
मन को जाने क्यों है उसपर, आज पूर्ण विश्वास
चलता रहता है मन भीतर, उसका सुखद प्रसंग।
मीठे सपनों में उड़ती हूँ, जैसे उड़े पतंग।। बरस रहा है------

कितने सावन बीत गये यूँ, रोती हूँ दिन रैन
दरवाज़े पर टिके हुए हैं,कबसे व्याकुल नैन
विरह अग्नि में झुलस गया है, अंतस का सुख चैन
साग़र जीने को अपनाऊँ, कहो कौन सा ढंग।
बिना तुम्हारे घर द्वारे का, हाल हुआ बदरंग।। बरस रहा है-----